प्रकाशन तिथि : 26 फरवरी 2015, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 33, अंक 8, कुल पृष्ठ 36

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

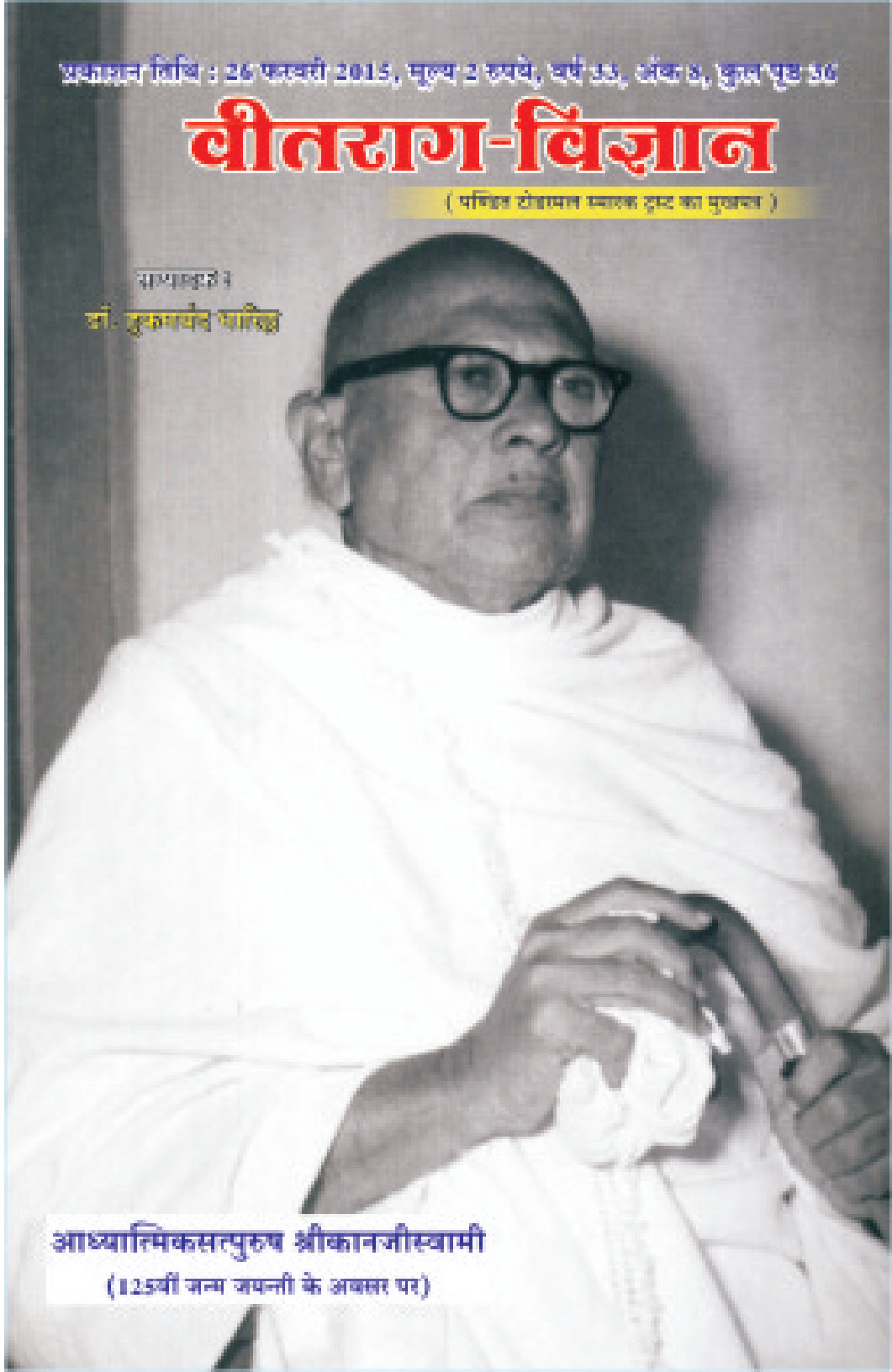

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी

(125वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर)

वीतराग-विज्ञान (380)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :

डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :

ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015

फोन:(0141)2705581, 2707458

फैक्स : 2704127

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7200
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	10200

शुद्धस्वरूप का अनुभव कर !

मैं ज्ञायक हूँ, ज्ञायक हूँ, विभाव से भिन्न मैं तो ज्ञायक प्रभु हूँ, अनन्त विभूति से परिपूर्ण हूँ, ज्ञायक भगवान आत्मा हूँ - इसप्रकार अंतर में सच्ची आत्मप्रतीति करे तो उस अन्तर्मुखता के बल से निर्विकल्पता हो, विकल्प छूटें और अतीन्द्रिय ज्ञानानन्दस्वरूप स्वानुभूति प्राप्त हो। धर्मीजीव को स्वानुभूति होने के पश्चात् भी राग तो आता है, परन्तु वह उसका मात्र ज्ञाता है, स्वामी नहीं है, उसे अपना कर्तव्य नहीं मानता। बात कुछ सूक्ष्म है। अनन्तबार इस जीव ने जैन श्रावक कुल में जन्म लिया और द्रव्यलिंगी साधु हुआ, परन्तु अपना जो राग रहित, पूर्णानन्द से भरपूर त्रैकालिक शुद्धस्वरूप है उस पर कभी दृष्टि नहीं दी, अन्तर्मुख होकर उसका अनुभव कभी नहीं किया। 199

-द्रव्यदृष्टि जिनेश्वर, पृष्ठ 45-46

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 33 (वीर नि. संवत् - 2541) 380 अंक : 8

नित पीज्यो धी धारी...

नित पीज्यो धी धारी, जिनवाणी सुधा-सम जानिके।।टेक।।
वीर मुखारविंदतैं प्रकटी, जन्म-जरा भयटारी।
गौतमादि गुरु-उर घट व्यापी, परम सुरुचि करतारी।।1।।
सलिल समान कलिलमलगंजन, बुधमनरंजन हारी।
भंजन विभ्रम धूलि प्रभंजन, मिथ्या जलद निवारी।।2।।
कल्याणकतरु उपवनधरिनी, तरनी भवजलतारी।
बंधविदारन पैनी छैनी, मुक्ति - नसैनी सारी।।3।।
स्व-परस्वरूप प्रकाशन को यह, भानुकला अविकारी।
मुनिमनकुमुदिनि-मोदनशशिभा, शमसुख सुमन सुवारी।।4।।
जाके सेवत बेवत निजपद, नसत अविद्या सारी।
तीन लोकपति पूजत जाको, जान त्रिजग-हितकारी।।5।।
कोटि जीभ सों महिमा जाकी, कहि न सके पविधारी।
'दौल' अल्पमति केम कहै यह, अधम-उधारन हारी।।6।।

– कविवर पण्डित दौलतरामजी

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की 125वीं जन्मजयन्ती के अवसर पर उनके प्रवचनों में से महत्वपूर्ण 125 अंशों को पाठकों के लाभार्थ यहाँ क्रमश: प्रकाशित किया जा रहा है।

(106) यदि कदाचित् तू ऐसा मानता हो कि वर्तमान में तो ये सब मुझे शरणभूत है; परन्तु जहाँ तुझे इस भव के बाद जाना है, वहाँ क्या तुझे ये ही शरण देने आयेंगे ? भाई ! जहाँ तू आँख बन्द होते ही चला जायेगा और कुत्ते, बिल्ली इत्यादि भव धारण करेगा, वहाँ तुझे कोई शरण नहीं होगा। यदि आत्मधर्म को समझेगा तो यह आत्मधर्म तुझे कहीं भी और किसी भी अवस्था में अवश्य शरणभूत होगा; इसलिए हे जीव ! आत्मधर्म को समझ ! तेरा अवश्य कल्याण होगा।

(107) अरे ! जो आत्मस्वरूप के विचार-मनन में अपने ज्ञान को रोके, उसे अनुभव का मार्ग मिलता है और जन्म-मरण का फेरा टलता है। आत्मा का हित करने का यह अवसर बड़ी मुश्किल से मिला है, उसमें भी यदि यह न समझे तो फिर कब समझेगा ?

(108) जीव को अन्तर में ऐसा लगना चाहिए कि अरे ! मेरा क्या होगा, मेरा हित कैसे हो ? सम्यग्दर्शन के बिना अनादि संसार में भटकते बाह्य में कहीं भी मुझे शरण नहीं मिली। इसलिए अब अन्तर में अपनी शरण ढूढूँ।

(109) वास्तव में आत्मा का स्वरूप तो यह है कि वह न तो सुनता है और न ही बहरा है। वह न तो बोलता है और न ही गूंगा है। आत्मा तो ज्ञाता-दृष्टा प्रभु है। जो यह मानता है कि आत्मा कान के अवलम्बन से सुनता है, वह अपने को पराधीन मानता है। उसे अपने स्वतन्त्र आत्मा के स्वतन्त्र आत्मा के स्वतन्त्र ज्ञानस्वभाव की सत्ता का भान नहीं है। जैसे - अग्नि उष्णता का पिण्ड है, उसी प्रकार आत्मा ज्ञान का पिण्ड है। उसमें अस्तित्व, वस्तुत्व, अगुरुलघुत्व आदि सामान्य और दर्शन, ज्ञान,

चारित्र आदि असाधारण गुण हैं। ऐसे अनन्त-अनन्त स्वभाववाला आत्मा स्वयं जाननेवाला है।

(110) परीक्षा तो अवश्य करना, परन्तु जिनआज्ञा को मुख्य रखकर करना। सर्वज्ञ की आज्ञा मानकर परीक्षा करना, अकेली परीक्षा करने जाओगे, तो भ्रष्ट हो जाओगे। जिनशासन में कथित द्रव्य स्वभाव की गम्भीरता, क्षेत्रस्वभाव की गम्भीरता, कालस्वभाव की गम्भीरता, अनन्तभावों के स्वभाव की गम्भीरता - इन सूक्ष्मस्वभावी पदार्थों को जिनाज्ञा से प्रमाण करना। अल्पबुद्धि का धारक जीव अकेली परीक्षा करने जावेगा तो जिनमत से च्युत हो जाने का बड़ा दोष उत्पन्न होगा। जिनआज्ञा को मुख्य रखकर, बने जितनी अर्थात् जितनी हो सके, उतनी परीक्षा करने में दोष नहीं है। अकेली आज्ञा से ही माने और परीक्षा करे ही नहीं तो भी निर्णय सच्चा नहीं हो सकता और सच्चा निर्णय हुये बिना किसी अन्य के द्वारा की गई कुतर्कपूर्ण वार्ता सुनकर श्रद्धान बदल भी सकता है। इसलिए परीक्षा करके निर्णय तो अवश्य करना; परन्तु जिनआज्ञा को मुख्य रखकर करना।

(111) 'मैं ही ज्ञानस्वरूप हूँ, मैं ही सूखस्वरूप हूँ' - ऐसी जिसे खबर नहीं, वह ज्ञान व सुख के लिए बाहर भ्रमण करता है। जिसप्रकार कस्तूरी मृग अपनी सुगन्ध को बाहर में ढूंढ-ढूंढकर हैरान होता है; ऐसा अपूर्व सुगन्ध मुझमें है, उसे यह विश्वास ही नहीं होता। उसी प्रकार जीव को अपने अंदर के निर्विकल्प चिदानन्द स्वभाव की प्रतीति नहीं होती, अत: बाहर में शरीरादि राग के विषयों में सुख ढूंढता है। इसप्रकार यह जीव बाहर भटक-भटक कर हैरान हो रहा है। भगवान कहते हैं कि हे भाई ! तेरा आनंद तुझमें ही भरा है। आनंद के लिए तुझे अन्य किसी की भी जरूरत नहीं है।

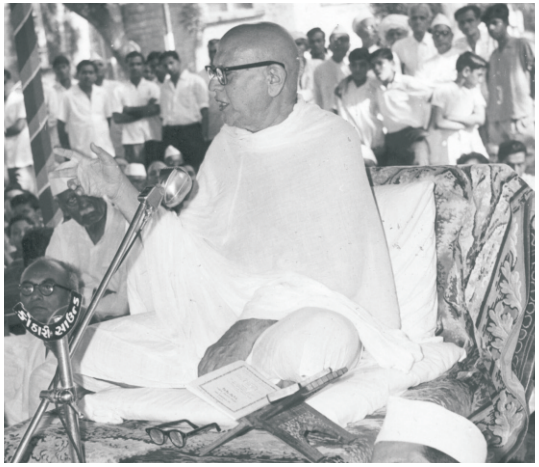

- वीतराग-विज्ञान : अप्रैल 1985, पृष्ठ 12-14

सम्पादकीय

तत्त्वार्थमणिप्रदीप

(आचार्य उमास्वामी कृत तत्त्वार्थसूत्र की टीका)

(गतांक से आगे....)

कल्प का स्वरूप

यहाँ कल्प शब्द बार-बार आ रहा है; अत: अब कल्प का स्वरूप कहते हैं –

प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः।।२३।।

ग्रैवेयकों से पहले के वैमानिक देवों के आवास कल्प कहलाते हैं।

तात्पर्य यह है कि वैमानिक देवों के आवासों में पहले स्वर्ग से लेकर सोलहवें स्वर्ग तक के विमान **कल्प** कहलाते हैं और उनमें रहनेवाले वैमानिक देव **कल्पवासी** कहे जाते हैं।

सोलह स्वर्ग से ऊपर के अर्थात् नव ग्रैवेयक, नव अनुदिश और पाँच अनुत्तर या उनमें रहनेवाले देव कल्पातीत हैं।

कल्पों में इन्द्रादि भेदों की कल्पना होती है और कल्पातीत में सभी देव अहमिन्द्र होते हैं। सभी समान होते हैं; उनमें छोटे-बड़े का भेद नहीं है।।२३।।

लौकान्तिक देव

संपूर्ण वैमानिकों का कथन हुआ; पर अब तक यह नहीं आया कि **लौकान्तिक देव कहाँ रहते हैं ? लौकान्तिक देव भी तो वैमानिक हैं।** इस शंका के समाधान में ही आगामी सूत्र आये हैं –

ब्रह्मलोकालया लौकान्तिकाः।।२४।।

सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधारिष्टाश्च।।२५।।

ब्रह्मलोक नाम का पाँचवाँ कल्प है आवास जिनका, उन्हें लौकान्तिक देव कहते हैं।

सारस्वत, आदित्य, वह्नि, अरुण, गर्दतोय, तुषित, अव्याबाध और अरिष्ट ये लौकान्तिक देव हैं।

तात्पर्य यह है कि लौकान्तिक देव ब्रह्म नामक पंचम स्वर्ग के अंतिम भाग में

रहते हैं, इसलिए उन्हें लौकान्तिक देव कहा जाता है।

दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि जिनके संसार समुद्र का किनारा अत्यन्त निकट आ गया है, वे लौकान्तिक देव हैं; क्योंकि वे वहाँ से आकर मनुष्य पर्याय प्राप्त कर उसी भव से मोक्ष चले जाते हैं।

ये लौकान्तिक देव ब्रह्मचारी होते हैं। अत्यंत वैराग्य प्रवृत्ति के होते हैं। विषयविरक्त होने से देवर्षि कहे जाते हैं। ये चौदह पूर्व के पाठी, ज्ञानोपयोगी, संसार से उद्विग्न, अनित्य आदि भावनाओं को भानेवाले, अति विशुद्ध सम्यग्दृष्टि होते हैं।

यहाँ तक कि ये तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों में भी आद्योपान्त नहीं रहते। मात्र दीक्षाकल्याणक के अवसर पर तीर्थंकर देव के वैराग्य की अनुमोदना करने के लिए आते हैं।

पूर्व-उत्तर आदि आठों ही दिशाओं में क्रम से सारस्वत आदि देवगण रहते हैं। पूर्वोत्तर कोण में सारस्वतों के विमान हैं। पूर्व दिशा में आदित्यों के विमान हैं। पूर्व-दक्षिण दिशा में वह्नि देवों के विमान हैं। दक्षिण दिशा में अरुण विमान हैं। दक्षिण-पश्चिम कोने में गर्दतोय देवों के विमान हैं। पश्चिम दिशा में तुषित देवों के विमान हैं। उत्तर-पश्चिम दिशा में अव्याबाध देवों के विमान हैं और उत्तर दिशा में अरिष्ट देवों के विमान हैं।

ये सभी स्वतंत्र हैं, किसी इन्द्र के आधीन नहीं हैं। सब समान हैं। इनमें कोई छोटा-बड़ा नहीं है।।२४-२५।।

द्विचरमशरीरी

ये लौकान्तिक देव एक चरमशरीरी होते हैं। अब प्रश्न होता है कि **और भी कोई चरमशरीरी होते हैं क्या ? इसका उत्तर** आगामी सूत्र में दिया जा रहा है –

विजयादिषु द्विचरमाः।।२६।।

विजयादि दो चरमवाले होते हैं।

तात्पर्य यह है कि विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित और अनुदिश विमानों में द्विचरम होते हैं। इनमें समानता इसलिए है कि सभी पूर्व सम्यग्दृष्टि और अहमिन्द्र हैं। सर्वार्थसिद्धि नाम से ही सूचित होता है कि वहाँ के देव सर्वोत्कृष्ट हैं और एकचरम हैं।

द्विचरमत्व मनुष्यदेह की अपेक्षा है अर्थात् विजयादिक से च्युत होकर सम्यग्दर्शन को कायम रखते हुए मनुष्यों में उत्पन्न होते हैं, फिर संयम की आराधना कर वैमानिकों

में उत्पन्न होते हैं। फिर च्युत होकर मनुष्यभव धारण कर मुक्त हो जाते हैं। **इसतरह मनुष्य भव की अपेक्षा द्विचरमत्व है, वैसे तो दो मनुष्यभव तथा एक देवभव मिलाकर त्रिचरम गिने जा सकते हैं।**

जो देव अहमिन्द्र होने के साथ-साथ जन्म से सम्यग्दृष्टि ही होते हैं, उनका यहाँ आदि शब्द से ग्रहण किया है। इसलिए विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित और नौ अनुदिश विमानों के अहमिन्द्र देव मनुष्य के दो भव लेकर मोक्ष जाते हैं अर्थात् विजयादिक से चय कर मनुष्य होते हैं। फिर संयम धारण कर पुन: वैमानिकों में जन्म लेते हैं। फिर वहाँ से चयकर मनुष्य हो, मोक्ष प्राप्त करते हैं। इसतरह वे 'द्विचरम' कहे जाते हैं; क्योंकि **मनुष्यभव से ही मोक्ष मिलता है, इसलिए मनुष्यभव को चरमदेह कहते हैं।**

यहाँ इतना विशेष जानना कि नौ अनुदिश तथा चार अनुत्तरों के देव एक भव धारण करके भी मोक्ष जा सकते हैं।

यहाँ अधिक से अधिक दो भव बतलाये हैं, इसी से सर्वार्थसिद्धि का ग्रहण यहाँ नहीं किया; क्योंकि **सर्वार्थसिद्धि के देव अत्यन्त उत्कृष्ट होते हैं। इसी से उनके विमान का नाम सर्वार्थसिद्धि सार्थक है। वे एक ही भव धारण करके मोक्ष जाते हैं।**

त्रिलोकसार में लिखा है कि सर्वार्थसिद्धि के देव, लौकान्तिक देव, सब दक्षिणेन्द्र, सौधर्म स्वर्ग के लोकपाल, इन्द्राणी शचि – ये सब एक मनुष्यभव धारण करके मोक्ष पा जाते हैं।।२६।।

तिर्यंचगति

नारकी, मनुष्य और देवों का वर्णन हुआ। अब संसारी जीवों में तिर्यंच ही शेष रहते हैं; अत: अब उनकी बात करते हैं –

औपपादिकमनुष्येभ्य: शेषास्तिर्यग्योनय: ।।२७।।

उपपाद जन्मवाले अर्थात् देव और नारकी तथा मनुष्यों को छोड़कर शेष जो संसारी जीव हैं, वे सब तिर्यंच हैं।

यह तो स्पष्ट ही है कि मनुष्य, देव और नारकी – सभी सैनी पंचेन्द्रिय ही होते हैं; परन्तु एकेन्द्रिय से लेकर असैनी पंचेन्द्रिय तक के सभी जीव तिर्यंच ही हैं।

निगोदिया जीव भी तिर्यंच ही हैं। सैनी पंचेन्द्रिय भी तिर्यंच होते हैं।

तिर्यंचों का कोई एक स्थान सुनिश्चित नहीं है; वे सम्पूर्ण लोकाकाश में पाये जाते हैं।।२७।।

देवों की आयु का निर्देश

नारकी, मनुष्य और तिर्यंचों की आयुकर्म की स्थिति का निरूपण यथास्थान हो चुका है; अब उपपाद जन्मवाले देवों की उत्कृष्ट आयु का निरूपण करते हैं।

स्थितिरसुरनागसुपर्णद्वीपशेषाणां सागरोपमत्रिपल्योपमार्धहीनमिता:।।२८।।

सौधर्मैशानयो: सागरोपमेऽधिके ।।२९।।

सानत्कुमारमाहेन्द्रयो: सप्त ।।३०।।

त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपंचदशभिरधिकानि तु ।।३१।।

आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ।।३२।।

भवनवासियों में असुरकुमार, नागकुमार, सुपर्णकुमार, द्वीपकुमार और बाकी के बचे छह कुमारों की आयु क्रमश: एक सागर, तीन पल्य, इसके बाद आधा-आधा पल्य कम करते जावो – ऐसी है।

तात्पर्य यह है कि असुरकुमारों की एक सागर, नागकुमारों की तीन पल्य, सुपर्णकुमारों की ढाई पल्य, द्वीपकुमारों की दो पल्य, शेष बचे छह कुमारों की अर्थात् विद्युतकुमार, अग्निकुमार, वातकुमार, स्तनितकुमार, उदधिकुमार और दिक्कुमार – इन सभी की आयु डेढ-डेढ पल्य है।

सौधर्म और ऐशान स्वर्ग के देवों की आयु दो सागर से कुछ अधिक है।

घातायुष्क देवों की आयु अन्य देवों की अपेक्षा आधा सागर अधिक होती है।

जिन्होंने पहले ऊपर के स्वर्गों की आयु बांधी थी, बाद में संक्लेश परिणामों के कारण जो आयु में ह्रास करके नीचे के स्वर्ग में उत्पन्न होते हैं, वे घातायुष्क कहलाते हैं।

घातायुष्क जीवों की उत्पत्ति बारहवें स्वर्ग तक ही होती है। इसलिए कुछ अधिक आयुवाली बात भी वहीं तक होती है।

सानत्कुमार और माहेन्द्र स्वर्ग में देवों की उत्कृष्ट आयु सात सागर से कुछ अधिक है।

पूर्व सूत्र में कहे हुए युगलों की आयु (सात सागर) से क्रमपूर्वक, तीन, सात, नव, ग्यारह, तेरह और पन्द्रह सागर अधिक आयु, उसके बाद के स्वर्गों में है।

तात्पर्य यह है कि ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर में दस सागर से कुछ अधिक, लान्तव-कापिष्ठ युगल में चौदह सागर से कुछ अधिक, शुक्र-महाशुक्र में सोलह सागर से कुछ अधिक, शतार-सहस्रार में अठारह सागर से कुछ अधिक तथा आनत-प्राणत में बीस सागर और आरण-अच्युत में बाईस सागर आयु है।

आरण और अच्युत स्वर्ग से ऊपर के नव ग्रैवेयकों में, नव अनुदिशों में, विजय इत्यादि विमानों में और सर्वार्थसिद्धि विमानों में देवों की आयु एक-एक सागर अधिक है।

तात्पर्य यह है कि पहले ग्रैवेयक में २३ सागर, दूसरे ग्रैवेयक में २४ सागर, तीसरे ग्रैवेयक में २५ सागर, चौथे ग्रैवेयक में २६ सागर, पाँचवें ग्रैवेयक में २७ सागर, छठवें ग्रैवेयक में २८ सागर, सातवें ग्रैवेयक में २९ सागर, आठवें ग्रैवेयक में ३० सागर और नौवें ग्रैवेयक में ३१ सागर आयु है।

नव अनुदिशों में ३२ सागर और अनुत्तरों में ३३ सागर की उत्कृष्ट स्थिति है। सर्वार्थसिद्धि में मात्र उत्कृष्ट स्थिति ही होती है और वह तैंतीस सागर है।।२८-३२।।

जघन्य स्थिति

अभी तक देव और नारकियों की उत्कृष्ट स्थिति बता रहे थे; अब **मुख्यरूप से जघन्य स्थिति की बात करते हैं –**

अपरापल्योपममधिकम्।।३३।।
परतः परतःपूर्वा पूर्वानन्तराः।।३४।।
नारकाणां च द्वितीयादिषु।।३५।।
दशवर्षसहस्राणि प्रथमायाम्।।३६।।
भवनेषु च ।।३७।।
व्यन्तराणां च।।३८।।

सौधर्म और ऐशान कल्प में जघन्य स्थिति कुछ अधिक एक पल्य है।

पहले के अर्थात् नीचे के कल्प युगल में जो उत्कृष्ट स्थिति है; वह उनसे अगले अर्थात् ऊपर के कल्प युगल की जघन्य स्थिति है।

इसीप्रकार नरकों की स्थिति में भी समझना चाहिए।

पहले नरक की जघन्य स्थिति दश हजार वर्ष है।

भवनवासियों की भी जघन्य स्थिति दश हजार वर्ष है।

इसीप्रकार व्यन्तरों की भी जघन्य स्थिति दश हजार वर्ष ही है।

तात्पर्य यह है कि सौधर्म और ऐशान स्वर्ग की जो साधिक दो सागर उत्कृष्ट स्थिति है; वही सानत्कुमार और माहेन्द्र स्वर्ग की जघन्य स्थिति है।

इसीप्रकार सानत्कुमार और माहेन्द्र स्वर्ग की जो साधिक सात सागर स्थिति कही है; वही ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर स्वर्ग की जघन्य स्थिति बन जाती है।

इसीप्रकार आगे भी समझ लेना चाहिए।

नरकों में भी जो स्थिति प्रथम नरक की उत्कृष्ट स्थिति है, वही दूसरे नरक की जघन्य स्थिति है।

दूसरे नरक की जो उत्कृष्ट स्थिति है, वही तीसरे नरक की जघन्य स्थिति है। इसीप्रकार आगे भी लगा लेना चाहिए।

प्रथम नरक, भवनवासी और व्यंतर देवों की भी जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष ही है।।३३-३८।।

व्यन्तरों, ज्योतिषियों और लौकान्तिक देवों की उत्कृष्ट व जघन्य स्थिति

अब शेष बचे देव और नारकियों की उत्कृष्ट व जघन्य स्थिति बताते हैं –

परा पल्योपममधिकम्।।३९।।
ज्योतिष्काणां च।।४०।।
तदष्टभागोऽपरा।।४१।।
लौकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम्।।४२।।

व्यन्तरों की उत्कृष्ट स्थिति एक पल्य से कुछ अधिक है।

ज्योतिषियों की भी उत्कृष्ट स्थिति एक पल्य से कुछ अधिक है।

ज्योतिषियों की जघन्य स्थिति; ज्योतिषियों की उत्कृष्ट स्थिति के आठवें भाग ($^{१}/_{८}$) है।

सभी लौकान्तिक देवों की स्थिति आठ सागर है। इनमें उत्कृष्ट जघन्य का भेद नहीं है। सभी की स्थिति समान ही होती है।

इन सभी लौकान्तिक देवों के शुक्ल लेश्या होती है और शरीर की ऊँचाई पाँच हाथ होती है।

इसप्रकार हम देखते हैं कि देव और नारकियों की स्थिति कम से कम दस हजार वर्ष और अधिक से अधिक तैंतीस सागर तक है।

विचार करने की बात यह है कि यदि हम अपने मिथ्यात्व सहित अशुभ भावों के कारण नरकों में चले गये तो अपरिमित काल तक अनंत प्रतिकूलता को भोगना पड़ेगा। नरकों की प्रतिकूलताओं का विवेचन तीसरे अध्याय में विस्तार से किया ही गया है।

यदि मिथ्यात्व सहित शुभभाव भी किये और भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिषी देवों में पैदा हो गये, नववें ग्रैवेयक तक भी चले गये; तब भी संसार का अंत आनेवाला नहीं है।

इसलिए सभी भव्य आत्माओं को इस बात पर गंभीरता से विचार करना चाहिए कि मिथ्यात्व अर्थात् मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र का अभाव करके, सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र को प्राप्त करके संसार का अंत कैसे करें ?

यही कारण है कि इस ग्रंथ में भव के अन्त का उपाय, मुक्ति का मार्ग सबसे पहले बताया गया है। **संसार के दु:खों का स्वरूप सुनकर यह जीव घबड़ाये नहीं; अपितु सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्ररूप मुक्ति के मार्ग में लगें – यही भावना रही है आचार्यदेव की।।३९-४२।।**

इसप्रकार यहाँ चौथा अध्याय समाप्त होता है।

पाँचवाँ अध्याय

पृष्ठभूमि

सात तत्त्वार्थों में जीव और अजीव तत्त्वार्थ द्रव्यरूप हैं और आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष तत्त्वार्थ पर्यायरूप हैं।

दूसरे, तीसरे और चौथे अध्याय में जीव तत्त्वार्थ की चर्चा पर्याप्त विस्तार के साथ संपन्न हुई। अब अजीव तत्त्वार्थ की चर्चा इस पाँचवें अध्याय में चलेगी। इसप्रकार **पाँच अध्यायों में द्रव्य तत्त्वार्थों की चर्चा सम्पन्न होगी।**

इसके बाद छठवें अध्याय से पर्याय तत्त्वार्थों की चर्चा आरंभ होगी; जो दसवें अध्याय में होनेवाली मोक्षतत्त्वार्थ की चर्चा के बाद समाप्त होगी।

यह तो पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है कि **छठवें अध्याय में** सामान्य आस्रव के साथ अशुभ आस्रव की एवं **सातवें अध्याय में** शुभास्रव की चर्चा होगी। **आठवें अध्याय में** बंध, **नौवें अध्याय में** संवर, निर्जरा एवं **दसवें अध्याय में** मोक्ष तत्त्वार्थ की चर्चा होगी।

अजीव तत्त्वार्थ की चर्चा करनेवाले इस अध्याय में जैनदर्शन के मर्म को उद्घाटित करनेवाले ऐसे छह सूत्रों पर भी चर्चा होगी; जिनका संबंध अकेले अजीव तत्त्वार्थ से नहीं है, अपितु वे पूरे जैनदर्शन के मूल सिद्धान्तों पर प्रकाश डालनेवाले होंगे।

वे महत्त्वपूर्ण सूत्र निम्नानुसार हैं –

१. सद्द्रव्यलक्षणम्
२. उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत्
३. गुणपर्ययवद् द्रव्यम्
४. द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः
५. तद्भावः परिणामः
६. अर्पितानर्पितसिद्धेः

इन सूत्रों की चर्चा यथास्थान होगी ही। अब आगामी अंक में अजीव तत्त्वार्थ की चर्चा आरंभ करेंगे। **(क्रमशः)**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

1 मार्च	जयपुर (राज.)	महाविद्यालय विदाई समारोह
8 मार्च	जयपुर	सेमीनार
2 से 6 अप्रैल	विदिशा (म.प्र.)	पंचकल्याणक
12 अप्रैल	दिल्ली	उपकार दिवस व मुमुक्षु मण्डल दिल्ली का स्वर्ण जयंती समारोह
17 से 21 अप्रैल	मंगलायतन	गुरुदेवश्री जयन्ती
26 अप्रैल से 2 मई	सोलापुर	इन्द्रध्वज विधान
17 से 22 मई	पारले (मुम्बई)	पंचकल्याणक
24 मई से 10 जून	मेरठ	प्रशिक्षण-शिविर
11 जून से 15 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र – श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

छहढाला प्रवचन

सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान में अन्तर

सम्यक् साथै ज्ञान होय, पै भिन्न आराधौ।
लक्षण श्रद्धा जानि, दूहू में भेद अबाधौ।।
सम्यक् कारण जान, ज्ञान कारज है सोई।
युगपत् होते हू, प्रकाश दीपक तैं होई।।२।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की चौथी ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

सच्चा ज्ञान होने पर आत्मा में संदेह नहीं रहता। यह जीव लोक में भी जिस वस्तु को जानता है, उसको सन्देह रहित जानता है, तो आत्मा को जानने में सन्देह कैसे चले ? सोना, हीरा आदि को नि:संदेह परीक्षा करके ही खरीदता है। ''चाहे जो भी होगा'' – ऐसा संदेह रखकर ऐसे-ऐसे ही नहीं ले लेता। फिर यह तो चैतन्य हीरा है, अपूर्व मोक्षमार्ग है, उसको सन्देह रहित परीक्षा करके स्वीकार करे तो ही सम्यग्ज्ञान होता है, उसमें सन्देह वाला ज्ञान नहीं चल सकता। इसप्रकार आत्मा की निस्सन्देहता वाले सम्यग्ज्ञान को भिन्न-भिन्न लक्षणों से पहिचान कर अपने हित के लिए उसकी आराधना करो।

सच्चा ज्ञान जगत में सार है। सम्यग्ज्ञान के बिना राग की मंदता से पुण्य बंधता है, उससे स्वर्ग मिलता है, किन्तु जन्म-मरण का अन्त नहीं आता। जन्म-मरण का अन्त तो सम्यग्ज्ञान से ही आता है।

परद्रव्यन तें भिन्न आप में रुचि सम्यक्त्व भला है।
आप रूप को जानपनो सो सम्यग्ज्ञान कला है।।

परद्रव्यों से भिन्न, जिसमें अनन्त ज्ञान आनन्द निश्चय से भरा है – ऐसे आत्मा को पहचान कर अनुभवपूर्वक जो रुचि और ज्ञान हुआ, वह सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान है और मोक्ष के साधने की कला है। भाई संसार की अन्य अनेक कलायें

तूने पढीं, किन्तु मोक्ष के लिए यह वीतरागी कला तूने कभी न जानी। अनन्तकाल में प्रगट नहीं की, ऐसी यह ज्ञान कला अपूर्व चीज है, वह जन्म-मरण के दु:खों को मिटानेवाला परम अमृत है, वही परम सुख का कारण है। सम्यग्दर्शन के बाद भी अविच्छिन्न धारा से भेदज्ञान की भावना करना उचित है, अत: केवलज्ञान होने तक उसी के करने का उपदेश है।

सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान दोनों निर्मल पर्यायें हैं। एक पर्याय श्रद्धा गुण की है और दूसरी ज्ञान गुण की है। उन दोनों पर्यायों में व्यवहार से कारण-कार्यपना है। यद्यपि ज्ञान पर्याय गुण के आधार से है, किन्तु सहचर अपेक्षा से श्रद्धा पर्याय को उसका कारण कहा, रागादि अशुद्धता को कारण नहीं कहा। इसीप्रकार अतीन्द्रिय ज्ञान को अतीन्द्रिय सुख का साधन कहना इत्यादि कथन भी व्यवहार है। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, आनन्द आदि सभी पर्यायों का मूल उपादान तो आत्मद्रव्य है, उसके अनन्त गुणों की पर्यायें एक साथ परिणमती हैं, उनमें से सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान का स्वरूप बताने के लिए यह वर्णन है। वह सम्यग्दर्शन और ज्ञान पर्याय पर में से या राग में से नहीं आती, परवस्तु या राग उसका कारण नहीं। अपनी निर्मल पर्यायों में परस्पर कारण-कार्यपना व्यवहार से कहा, निश्चय से उन-उन पर्यायों रूप से परिणमित आत्मा ही अभेदपने उनका कारण है, कारण-कार्य भिन्न नहीं है, उनमें समयभेद नहीं है। भगवान आत्मा में श्रद्धा-ज्ञानादि निज गुणों की अनन्त शक्ति भरी है, वही अपने-अपने निर्मल भावरूप से परिणमती है, उसमें बाहर का कोई कारण नहीं। आत्मा के अनन्त गुणों में परस्पर कारण-कार्यपना कहा जाता है। जैसे – यहाँ सम्यग्दर्शन को सम्यग्ज्ञान का कारण कहा। प्रवचनसार में अतीन्द्रिय ज्ञान को अतीन्द्रिय सुख का कारण कहा, समयसार में अज्ञानी निश्चय चारित्र के कारणरूप ज्ञान-श्रद्धानरूप से शून्य है – ऐसा कहकर सम्यक्श्रद्धा-ज्ञान को चारित्र का कारण कहा – इसप्रकार आत्मा की अपनी पर्यायों में अनेकप्रकार से कारण-कार्यपना कहा जाता है, परन्तु रागादि अशुद्धता के साथ शरीर की क्रिया के साथ सम्यग्दर्शन आदि का कारण-कार्यपना नहीं है। देखो, वहाँ समयसार में सम्यक्श्रद्धा-ज्ञान को निश्चय चारित्र का कारण कहा है। पंचमहाव्रत-समिति आदि व्यवहार-चारित्र करने पर भी सम्यग्दर्शन

बिना मिथ्यादृष्टि जीव को चरित्रहीन कहा है, क्योंकि चारित्र के मूल कारणरूप सम्यग्दर्शन-ज्ञान का ही उसके अभाव है। सम्यग्दर्शन-ज्ञानपूर्वक ही सम्यक्चारित्र होता है, इसलिए उस सम्यग्दर्शन-ज्ञान को चारित्र का मूल कारण कहा। उसीप्रकार सम्यग्ज्ञान का कारण सम्यग्दर्शन कहा। सम्यग्दर्शन बिना चाहे जितना शास्त्र ज्ञान हो तो भी वह सम्यग्ज्ञान नहीं कहा जाता। जिस ज्ञान में अपना आत्मा न आया, उसको सम्यक् कौन कहे ? जो ज्ञान स्वयं अपने को ही न जाने उसे ज्ञान कौन कहे ? जो ज्ञान आत्मा को न साधे, जो मोक्ष का साधन न हो, वह सम्यग्ज्ञान नहीं, वह तो मिथ्याज्ञान है। सम्यग्दर्शन के साथ का ही ज्ञान सम्यग्ज्ञान है, इसलिए सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान को बराबर पहिचान कर उसकी आराधना करना चाहिए।

सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान बिना जीव ने संसार में अनन्त भव धारण किये और अनन्त दु:ख भोगे। राजा हुआ, भिखारी भी हुआ, स्वर्ग में गया और नरक में भी गया, किन्तु कहीं सुख नहीं मिला। कोटि जन्मों में तप तपा (शान्ति में नहीं ठहरा, किन्तु तपा) और आत्मज्ञान बिना दु:खी ही रहा। यहाँ तो अब तत्त्व के ज्ञान से आत्मा के स्वरूप का सच्चा निर्णय और अनुभव करके सम्यग्दर्शन हुआ, उसके साथ के सम्यग्ज्ञान की बात है। ऐसा सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान गृहस्थ को भी होता है। वह धर्मी जानता है कि हमारी चीज तो अन्तर में ज्ञान और आनन्द से भरी है, इस बाहर की चीज में हम नहीं और हमारे में बाहर की चीज नहीं – ऐसा भेदज्ञान ही वीतराग विज्ञान है, मोक्ष का कारण है और तीन लोक में सारभूत है। आत्मा के ज्ञान समान जगत् में अन्य कोई सुख का कारण नहीं। इस ढाल में ही आगे चौथे श्लोक में कहेंगे –

ज्ञान समान न आन जगत में सुख को कारन,
इह परमामृत जन्म-जरा-मृत रोग निवारन।।

संसार में पैसा-मकान-मोटर आदि में सुख है ही नहीं। अरे ! स्वर्ग के वैभव में भी सुख नहीं है, तब अन्य की बात क्या ? सुख तो बस, सम्यग्ज्ञान से आत्मा का अनुभव होने में ही है, वही सच्चा सुख है, शेष तो सब कुछ अज्ञानी की कल्पना है।

यहाँ बाहर की पढाई रूप ज्ञान की बात नहीं है, किन्तु अपने आत्मा के अनुभव

में से प्रगट हुए अन्तर्ज्ञान की बात है। मैं शुद्ध आनन्द चैतन्यमूर्ति हूँ – ऐसे देहादि से भिन्न आतमा का ज्ञान होने पर परम अतीन्द्रिय शान्तिरूप जो सुख अनुभव में आता है, वैसा सुख जगत में कहीं नहीं है। पुण्य को सुख का कारण नहीं कहा, राग को या बाह्य सामग्री को भी सुख का कारण नहीं कहा। शुभराग, पुण्य और बाह्यसामग्री, इन सबसे पार चिदानन्द आत्मा के सच्चे ज्ञान को सुख का कारण कहा; क्योंकि वह ज्ञान स्वयं आनन्दरूप होकर प्रकट होता है, आत्मा के सुख का स्वाद लेते हुए ज्ञान प्रकट होता है।

हे भाई ! तू बाहर के थोथे जानपने में अपनी बुद्धि को रोकता है, उसके बदले अन्तर में आत्मा का प्रेम लाकर, आत्मा का स्वरूप कैसा अद्भुत है, यह जानने में अपनी बुद्धि को जोड़ तो तेरा परम हित होगा। आत्मा को जानने पर तुझे परमसुख का अनुभव होगा। आत्मा कैसा है ? उसका विचार, अभ्यास और मनन किए बिना यदि जीवन पूरा हो गया तो तू सुख कहाँ से पायेगा ? इसलिए सम्यग्दर्शन सहित सम्यग्ज्ञान की आराधना कर। सम्यग्दर्शन के बाद ही ज्ञान की विशेष आराधना का उपदेश है।

अरे ! सच्चे ज्ञान बिना अज्ञान भाव में तो सुख कहाँ से होगा ? जीव अज्ञान के कारण संसार की चार गति में अनन्त दु:ख भोग रहा है। उससे छूटने और सुखी होने के लिए यह उपदेश है; क्योंकि चारगति में अनन्तजीव हैं, वे सब दु:ख से छूटकर सुखी होना चाहते हैं, अत: जिससे दु:ख मिटे और सच्चा सुख हो, ऐसे वीतराग-विज्ञान का उपदेश श्रीगुरु ने करुणापूर्वक दिया है। हे भाई ! अपने आत्मा को पहिचानकर ऐसा सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान करने से ही तुझे सुख होगा और तेरा दु:ख मिटेगा। अत: सम्यग्दर्शन और ज्ञान को पहचान कर उनकी आराधना करो। सम्यग्दर्शन-ज्ञान प्रगट होने के बाद चारित्र की आराधना का भी उपदेश करेंगे। तीसरी ढाल में सम्यग्दर्शन का वर्णन करके उसकी महिमा बताई, इस चौथी ढाल में सम्यग्ज्ञान का वर्णन करके उसकी महिमा बताते हैं ? और बाद में छठी ढाल में सम्यक्चारित्र का वर्णन करके उसकी महिमा बतायेंगे। इस प्रकार सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप वीतराग-विज्ञान ही जीव के सुख का कारण है, उसकी आराधना का यह उपदेश है।

(क्रमश:)

नियमसार प्रवचन –

ईर्यासमिति का स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 61वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है –

पासुगमग्गेण दिवा अवलोगंतो जुगप्पमाणं हि।
गच्छइ पुरदो समणो इरियासमिदी हवे तस्स।।६१।।

(हरिगीत)

जिन श्रमण धुरा प्रमाण भूलख चले प्रासुक मार्ग से।
दिन में करें विहार नित ही समिति ईर्या यह कही।।६१।।

जो श्रमण प्रासुक (निर्जन्तु) मार्ग पर दिन में धुरा प्रमाण अर्थात् चार हाथ जमीन देखकर चलते हैं; उन मुनिराजों के उक्त सावधानीपूर्वक होने वाले गमन (विहार) और तत्संबंधी भावों को ईर्यासमिति कहते हैं।

(गतांक से आगे....)

मुनि को छठे गुणस्थान में शुद्धपरिणति होने पर भी वहाँ शुभविकल्प भी होता है। उसमें देखकर चलना – ऐसा विकल्प उठता है, उसे व्यवहार ईर्यासमिति कहते हैं। व्यवहार इसलिए कहने में आता है क्योंकि वहाँ साथ में शुद्धपरिणति वर्तती है। तीर्थंकर को भी छठे गुणस्थान में ऐसा शुभविकल्प उठता है – उसमें हठ नहीं है; बाहर की क्रिया को मैं करूँ अथवा रोकूँ – ऐसी बुद्धि धर्मी को नहीं होती। अज्ञानी को शुद्धपरिणति के बिना शुभोपयोग होता है, उसे तो व्यवहारसमिति भी नहीं कहा जाता।

परमसंयमी मुनि को (अर्थात् मुनियोग्य शुद्धपरिणतिवाले मुनि को) शुद्ध परिणति के साथ होने वाला (हठरहित) ईर्यासम्बन्धी (गमनसम्बन्धी) शुभोपयोग व्यवहार ईर्यासमिति है। शुद्धपरिणति के अभाव में शुभोपयोग हठसहित होता है, उस शुभोपयोग को तो व्यवहारसमिति भी नहीं कहते। (इसीप्रकार अन्य समितियों में भी समझना)।

व्यवहारसमिति शरीर की क्रिया में नहीं है, वह तो आत्मा का शुभभाव है। जिसको आत्मा का भान है, वीतरागी शुद्धपरिणति विशेष वर्त रही है, ऐसे परमसंयमी मुनि को छठे गुणस्थान में गुरुयात्रा, देवयात्रा, तीर्थयात्रा आदि के शुभविकल्प होने पर मार्ग में सावधानीपूर्वक देखकर चलने का भाव आता है, वह ईर्यासमिति है। ऐसा शुभविकल्प आवे वह छठे गुणस्थान का काल है, मुनि को उसका हठ नहीं होता, वह उस स्थिति को जानकर यह समझता है कि अभी इसप्रकार के विकल्प का काल है। विकल्प के काल में विकल्प आ गया, देह की क्रिया अपने काल में हो गई, वहाँ मुनि की शुद्धपरिणति टिकी रहती है, अतः विकल्प को आरोप से व्यवहारसमिति कहा जाता है। किन्तु यदि ऐसा माने कि देह की क्रिया मैं करता हूँ तब तो वह जड़ के परिग्रह का स्वामी हो जायेगा, वह मूढ़ है, उसको व्यवहार से भी व्रत या समिति नहीं होती।

भावलिंगी सन्त मुनि को भी सम्मेदशिखर, गिरनार आदि तीर्थों की यात्रा का भाव छठे गुणस्थान में होता है। भगवान समवशरण में विराजते हैं, वहाँ उनके दर्शन करने के लिये जाने का भाव होता है, वह देवयात्रा का भाव है। गुरु विराजते हों उनके पास श्रवण आदि करने के लिए जाने का विकल्प उठे, वह गुरुयात्रा है। ऐसे प्रयोजन के उद्देश्य से मुनि गमन करें तब चार हाथ प्रमाण मार्ग देखकर जीवों की रक्षा करते हुए चलते हैं, उनके ईर्यासमिति होती है।

देवयात्रा, गुरुयात्रा, तीर्थयात्रा, आहार, दूसरे मुनि की वैयावृत्त्यादि के प्रसंग पर छठे गुणस्थानवाले मुनि को शुभविकल्प उठता है। पुष्पदन्त और भूतबलि मुनिराज विहार करते हुए गिरनार पर आए थे, श्रीधरसेनाचार्यदेव ने श्रुतरक्षा के हेतु से उनको बुलाया था। वहाँ उनको स्वप्न आया कि श्रुत का भार वहन कर सकें – ऐसे श्वेत वृषभ जैसे दो महासन्त आकर उनके चरणों में नमते हैं, अर्थात् उनके ऐसा उद्गार निकला कि 'जय हो श्रुतदेवता की'। वे मुनि विहार करके श्रीधरसेनाचार्य के पास आए और उन्होंने उन दोनों को षट्खण्डागम का ज्ञान कराया, पश्चात् उन दोनों मुनियों ने सूत्ररूप में षट्खण्डागमन की रचना की और जेठ सुदी पंचमी को श्रुतज्ञान का विशेष महोत्सव किया कि अहो! भगवान की दिव्यध्वनि का अंश

इसमें रह गया है।

मुनि को भी शास्त्र के बहुमान और महोत्सव का विकल्प आता है, छठे गुणस्थान में वैसा शुभभाव होता है। ज्ञातादृष्टापने रहकर, शुभराग आता है उसको जानते हैं। इस प्रकार का राग क्यों आया? – ऐसा माने तो उसे छठे गुणस्थान की स्थिति का ही बोध नहीं है। और यदि उस राग से लाभ माने तब तो वह अज्ञानी ही है। मुनि को राग की भावना नहीं है, साथ ही उसको टालने का हठ भी नहीं है। जड़ की क्रिया उसके अपने काल में होनी हो वह हो जाती है। मुनि को 'शास्त्र रचूँ' ऐसा विकल्प उठे, वहाँ भी शास्त्र-रचना की क्रिया का स्वामी वह नहीं होता।

श्री प्रवचनसारजी में टीका पूर्ण करते हुए अन्त में श्री अमृतचन्द्रदेव कहते हैं–

वास्तव में पुद्गल ही स्वयं शब्दरूप से परिणमित हुए हैं, आत्मा उनको परिणमन नहीं करा सकता; उसीप्रकार वास्तव में सर्व पदार्थ ही स्वयं ज्ञेयपने-प्रमेयपने परिणमते हैं, शब्द उनको ज्ञेय नहीं बना सकते - समझा नहीं सकते। इसलिए 'आत्मासहित विश्व वह व्याख्येय है - समझाने योग्य है, वाणी की गूँथनी व्याख्या है, और अमृतचन्द्रसूरि व्याख्याता - समझाने वाले हैं' – इसप्रकार मोह से न नाचो (मत प्रफुल्लित होओ); अपितु स्याद्वाद विद्या के बल से विशुद्धज्ञान की कला द्वारा इस एक सम्पूर्ण शाश्वत स्वतत्त्व को प्राप्त करके आज ही (जनों) अव्याकुलपने नाचो (परमानन्द परिणाम से परिणमो)।

विकल्प था तो ऐसा बोलने में आया कि आत्मा ने यह शास्त्र रचा; परन्तु यह तो कथन मात्र है। आत्मा जड़शास्त्र का कर्त्ता है - ऐसा मानना तो मूढ़ता है। जो जीव रागादि की क्रिया को अपनी मानते हैं, उनके समिति आदि नहीं होती। मुनि को अन्तर में आत्मा का भान है और छठे गुणस्थान में देवयात्रादि के लिए गमन का विकल्प उठता है, उस समय मार्ग शोधकर चलते हैं, उस समय ऐसा जानने का ज्ञान का काल है, स्वपर-प्रकाशक ज्ञान विकसित हुआ है, शुद्धपरिणति प्रकट हुई है, ऐसी स्थिति में मुनि का मार्ग देखकर चलने का विकल्प व्यवहारसमिति है।

छठे गुणस्थान में निश्चयपूर्वक ऐसी व्यवहारसमिति होती है।

अब निश्चयसमिति का स्वरूप कहते हैं -

''अभेद-अनुपचार-रत्नत्रयरूपी मार्ग में परमधर्मी ऐसा (अपना) आत्मा उसके प्रति सम्यक् 'इति' (गति) अर्थात् परिणति समिति है; अथवा निजपरम-तत्त्व में लीन सहज-परमज्ञानादिक परमधर्मों की संहति (मिलन, संगठन) समिति है।''

व्यवहारसमिति में रास्ता देखकर चलने की बात थी और यहाँ निश्चय में सम्यक्रत्नत्रय के मार्ग में परमधर्मी ऐसे अपने आत्मा के प्रति सम्यक्परिणति समिति है। अथवा आत्मा में सहज परमज्ञानादि परमधर्म प्रकट हुए हैं, उनकी संहति निश्चय समिति है। जो सहज सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चारित्रदशा प्रकटी है, उसकी आत्मा में लीनता निश्चयसमिति है। चौथे गुणस्थान में भी आंशिक शुद्धभाव प्रकट हुआ है वह वीतरागभाव है, जितना वीतरागभाव प्रकट हुआ है, वह मुक्ति का कारण है और जितना राग शेष है, वह बन्ध का कारण है। रागरहित दशा प्रकट हुई वह निश्चय है, तब जो राग शेष रहा है, वह व्यवहार है।

''इसप्रकार निश्चय-व्यवहाररूप समिति के भेदों को जानकर उनमें (उन दोनों में से) परमनिश्चयसमिति को भव्यजीव प्राप्त करो।''

निश्चय और व्यवहार दोनों का ज्ञान कराया; किन्तु उन दोनों में से आदरणीय तो परमनिश्चयवीतरागीसमिति ही है, उसको प्राप्त करो। स्वरूप की वीतरागी-परिणति में ठहरो और राग के मात्र ज्ञाता बने रहो।

मुनि को छठे गुणस्थान में शुभराग होता है और कोई निचली दशा वाला ऐसा माने कि 'मुझे तो भक्ति आदि का राग नहीं होने देना चाहिए; क्योंकि वह बन्ध का कारण है' तो उसे वस्तु का भान नहीं है - विवेक नहीं है। धर्मी सम्यग्दृष्टि को चौथे-पाँचवें गुणस्थान में भक्ति आदि का शुभराग आता है, वहाँ ऐसा हठ नहीं होता है कि इस राग को होने ही नहीं दूँगा। अरे! वह काल तो भक्ति के राग का ही काल है – ऐसा वह जानता है; हाँ स्वभावदृष्टि में उस राग का कर्ता नहीं होता। यहाँ तो आत्मभानसहित उसमें विशेष स्थिरता की बात है। छठे-सातवें गुणस्थानवाले मुनि की शुद्धपरिणति तो निश्चयसमिति है और छठे गुणस्थान में उठनेवाला विकल्प व्यवहारसमिति है। उन दोनों में से परमवीतरागी निश्चयसमिति को प्राप्त करो – ऐसा उपदेश है।

(क्रमशः)

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचचा क समय ावाभन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : पर्याय स्वयं सम्पूर्ण वस्तु नहीं है, फिर भी वह सम्पूर्ण वस्तु को कैसे जान लेती है ?

उत्तर : एक मतिज्ञान की पर्याय में भी इतनी शक्ति है कि वह सम्पूर्ण आत्मा को जान ले। पर्याय स्वयं परिपूर्ण वस्तु नहीं है - यह बात तो ठीक है, फिर भी सम्पूर्ण वस्तु को जान लेने की शक्ति उसमें है। केवलज्ञान पर्याय भले ही एक समय की है; परन्तु समस्त स्व-पर को जान लेने की अपार शक्ति उसमें है। पर्याय स्वयं परिपूर्ण वस्तु हो तभी वह परिपूर्ण वस्तु को जान सके - ऐसा नहीं है। जैसे आत्मा छह द्रव्यरूप न होने पर भी छह द्रव्यों को जान लेता है, ऐसी उसकी शक्ति है; उसीप्रकार एक पर्याय यद्यपि सम्पूर्ण वस्तु नहीं है; फिर भी सम्पूर्ण वस्तु को जान लेने की उसकी शक्ति है। जान लेने का कार्य तो केवल पर्याय में ही होता है, द्रव्य-गुण में नहीं होता।

प्रश्न : केवलज्ञानादिक क्षायिकभावों को नियमसार में परद्रव्य कहा है, सो समझ में नहीं आया कि आत्मा में ही होनेवाली पूर्णशुद्धपर्याय को परद्रव्य कैसे कहा ?

उत्तर : जिसप्रकार परद्रव्य में से अपनी पर्याय नहीं आती; उसीप्रकार क्षायिकभावरूप पर्याय में से भी नवीन पर्याय नहीं आती; अपने द्रव्य में से ही शुद्ध पर्याय आती है। इसलिये पर्याय के ऊपर का लक्ष छुड़ाकर द्रव्यस्वभाव का लक्ष कराने के प्रयोजन से केवलज्ञानादि क्षायिकभावों को भी परद्रव्य कहा है। पर्याय के ऊपर लक्ष करने से विकल्पोत्पत्ति होती है; इसलिये पर्याय पर से लक्ष हटाने के लिए उसे परद्रव्य कहा है।

केवलज्ञानादि पर्यायें क्षणिक होने से उन्हें अभूतार्थ भी कहा है और त्रिकाली ध्रुवस्वभाव को भूतार्थ कहा गया है। केवलज्ञानादि को पर्याय होने से व्यवहारजीव कहा है तथा त्रिकालीस्वभाव निश्चयजीव है। यह बात बराबर ध्यान में रखने की है कि क्षायिकभाव को अपेक्षावश परद्रव्य कहा गया है।

प्रश्न : क्या प्रत्येक पर्याय निरपेक्ष और स्वतंत्र है ?

उत्तर : प्रत्येक पर्याय सत् है, स्वतंत्र है; उसे पर की अपेक्षा नहीं। राग का कर्त्ता तो आत्मा नहीं, किन्तु राग का ज्ञान कहना यह भी व्यवहार है तथा ज्ञानपरिणाम को आत्मा करता है - ऐसा कहना भी व्यवहार है। वास्तव में तो उससमय की ज्ञानपर्याय षट्कारक से स्वतन्त्र हुई है।

प्रश्न : कृपया थोड़ा और विस्तार से समझाइये, हम तो विस्तार रुचि वाले हैं।

उत्तर : सुनो ! आत्मा कर्त्ता होकर पर्याय को करता है - ऐसा कहने में आता है; किन्तु वास्तव में तो पर्याय स्वयं षट्कारक की क्रियारूप से स्वतन्त्र परिणमन करती है। जहाँ भूतार्थ स्वभाव का आश्रय करने की बात आवे, वहाँ आश्रय करनेवाली पर्याय स्वयं षट्कारक से स्वतन्त्र कर्त्ता होकर लक्ष्य करती है। वीतरागी पर्याय का, सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की पर्याय का लक्ष्य - आश्रय त्रिकाली द्रव्य है; परन्तु वह लक्ष्यरूप पर्याय स्वयं षट्कारक से स्वतन्त्ररूपेण कर्त्ता होकर करती है - परिणमती है। पर्याय अहेतुक सत् है न ! विकारीपर्याय भी पर की अपेक्षा बिना - परनिरपेक्ष अपने ही षट्कारक से स्वतन्त्रतया परिणमन करती है - ऐसा पंचास्तिकाय गाथा 62 में कहा है।

विशेष क्या कहें - पर्याय विकारी हो अथवा अविकारी, वह तो प्रतिसमय स्वयं षट्कारक की क्रिया से स्वतन्त्र ही परिणमन करती है - उत्पन्न होती है। आहाहा ! स्वतन्त्रता की ऐसी बात जिसके श्रद्धान में बैठ जाय - जम जाय, उसके कर्मों का भुक्का उड़ जाता है; परन्तु जिसकी योग्यता हो, संसार का किनारा निकट आ गया हो, उसी को यह बात हृदयस्थ होती है। विरले ही ऐसी बात सुनने और समझने वाले होते हैं - उनकी बहुलता नहीं होती।

प्रश्न : सुखानुभव तो पर्याय में होता है तो फिर आत्मद्रव्य की महिमा क्यों गाई जाती है ?

उत्तर : अनुभव की शोभा वास्तव में आत्मद्रव्य के कारण ही है। आत्मद्रव्य कूटस्थ होने से यद्यपि अनुभव में नहीं आता तथा अनुभव तो पर्याय का ही होता है; तथापि जबतक पर्याय द्रव्य को स्वीकार नहीं करती; तबतक अनुभव नहीं होता। जहाँ पर्याय ने द्रव्य को स्वीकार किया, वहीं उसकी शोभा है और वह आत्मद्रव्य के कारण ही है।

समाचार दर्शन -

श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में -

ताजा हुई पंचकल्याणक की मधुर स्मृतियाँ

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में दिनांक 20 से 22 फरवरी, 2015 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का तृतीय वार्षिकोत्सव अनेक मांगलिक आयोजनों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर दिनांक 20 फरवरी को प्रात: श्री महावीर पंचकल्याणक विधान के उपरान्त उद्घाटन सभा को अत्यन्त संक्षेप में पूर्ण कर **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** द्वारा प्रवचनसार पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला। वार्षिकोत्सव का प्रारम्भ श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन परिवार जयपुर द्वारा ध्वजारोहण करके किया गया। सभी अतिथियों का सम्मान ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका ने किया। प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री महाचंदजी सेठी भीलवाड़ा एवं प्रवचन मंच का उद्घाटन श्री शांतिलालजी चौधरी भीलवाड़ा, टोडरमलजी के पट का अनावरण श्री कैलाशचंदजी सेठी परिवार एवं गुरुदेवश्री के पट का अनावरण श्री अजीतकुमारजी तोतूका परिवार के करकमलों से हुआ। समारोह का उद्घाटन श्री ताराचंदजी सोगानी परिवार जयपुर द्वारा किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अशोककुमारजी बड़जात्या इन्दौर (राष्ट्रीय अध्यक्ष - दि.जैन महासमिति) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री गुलाबचंदजी कटारिया (गृहमंत्री-राजस्थान सरकार) मंचासीन थे। विद्वत्वर्ग के अन्तर्गत डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अनिलकुमारजी 'धवल' भोपाल, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री मंचासीन थे। मंगलाचरण श्री गौरवजी सौगानी एवं मंच संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

इस महोत्सव में गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के साथ डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड द्वारा मार्मिक प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त महावीर पंचकल्याणक विधान, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत जन्मोत्सव व 'निमित्त-उपादान अदालत में' नामक नाटक, मेधावी छात्र पुरस्कार वितरण समारोह, जिनेन्द्र भक्ति आदि अनेक कार्यक्रम विशिष्ट आकर्षण का केन्द्र रहे।

समारोह में आयोजित श्री महावीर पंचकल्याणक विधान के आमंत्रणकर्ता श्रीमती सुशीला-शान्तिलालजी अलवरवाले जयपुर रहे। मंगल कलश विराजमानकर्त्ता श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी, श्री जितेन्द्रजी जैन अमेरिका, श्री ताराचंदजी पाटनी बापूनगर जयपुर एवं वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल बापूनगर थे।

इस अवसर पर दिनांक 17 मई से 22 मई तक मुम्बई के उपनगर विलेपार्ले में होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का श्री अक्षयभाई दोशी, श्री हितेनभाई अनंतभाई शेठ, श्री रजनीभाई हिम्मतनगर आदि महानुभावों ने आमंत्रण दिया। इसके साथ ही मेरठ (उ.प्र.) में लगने वाले दिनांक 24 मई से 10 जून तक होने वाले 49वें वीतराग-विज्ञान शिक्षण प्रशिक्षण शिविर का श्री सौरभ जैन, रोहित जैन, विकास जैन, अजय जैन आदि महानुभावों ने आमंत्रण दिया।

दिनांक 21 फरवरी की रात्रि को बाल तीर्थंकर के जन्मोत्सव का कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें माता के सोलह स्वप्न, इन्द्रसभा व राजसभा का मनमोहक दृश्य प्रस्तुत किया गया।

विधि-विधान एवं इन्द्रसभा आदि के संपूर्ण कार्य डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के निर्देशन में पण्डित अनिलजी धवल भोपाल, पण्डित दीपकजी धवल भोपाल एवं पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर द्वारा संपन्न हुये।

कार्यक्रम के अंतिम दिन दिनांक 22 फरवरी को जिनेन्द्र भगवान की विशाल शोभायात्रा का भव्य आयोजन किया गया।

शोभायात्रा में श्रीजी को लेकर रथ में बैठने का सौभाग्य पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई को प्राप्त हुआ। रथ में सारथी के रूप में श्री ताराचंदजी पाटनी एवं श्री ताराचंदजी सोगानी थे। श्री सुरेशचंदजी शिवपुरी धर्मध्वजा लेकर जुलूस में सबसे आगे चल रहे थे। जिनेन्द्र भगवान के रथ के साथ मंगल कलश एवं जिनवाणी लेकर अनेक साधर्मी महिलायें तथा महाविद्यालय के सैकड़ों वर्तमान एवं भूतपूर्व स्नातक विद्वान, जैन युवा फैडरेशन, जयपुर के सदस्यों के साथ-साथ सैकड़ों साधर्मी भाई अध्यात्म और भक्ति से सराबोर भजनों पर झूमते हुए चल रहे थे।

शोभायात्रा के मार्ग में पड़ने वाले सभी जैन परिवारों द्वारा श्रीजी के रथ का स्वागत मंगल स्वस्तिक चिह्न बनाकर एवं श्रीजी को अर्घ्य समर्पित कर किया गया।

यह शोभायात्रा श्री टोडरमल स्मारक भवन से राजेन्द्र मार्ग, सावित्री पथ, पार्श्वनाथ चैत्यालय होती हुई लगभग 2.5 कि.मी. का मार्ग तय कर श्री टोडरमल स्मारक भवन पहुँची। इस प्रकार अत्यंत उत्साहपूर्वक बापूनगर समाज में श्रीजी की भव्य शोभायात्रा निकाली गई।

शोभायात्रा के उपरान्त सीमंधर जिनालय एवं पंचतीर्थ जिनालय में विराजमान सभी जिनबिम्बों के महामस्तकाभिषेक का मंगलमयी आयोजन किया गया।

रथयात्रा व मस्तकाभिषेक के संचालन में पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित

(शेष पृष्ठ 30 पर ...)

वेदी शिलान्यास सानंद संपन्न

हेरले (महा.) : यहाँ सर्वोदय स्वाध्याय ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 20 से 22 जनवरी 2015 तक श्री भक्तामर मंडल विधानपूर्वक तीन चौबीसी तीर्थंकर मंदिर का 72 वेदी शिलान्यास, मूलनायक भगवान महावीर चैत्यालय का उद्घाटन तथा चैत्यालय में मूर्ति विराजमान करने का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के 'भगवान बनने का उपाय भेदविज्ञान' विषय पर सरल-सुबोध भाषा में हुए पाँच प्रवचन विशेष रूप से सराहे गये। साथ ही ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली एवं पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर के प्रवचनों का भी लाभ प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में मूलनायक भगवान महावीर की प्रतिमा श्री बालासाहेब वसवाडे परिवार द्वारा विराजमान की गई।

विधि-विधान के कार्य एवं संपूर्ण कार्यक्रम ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पण्डित अशोकजी उज्जैन एवं पण्डित रमेशजी इन्दौर द्वारा संपन्न हुये।

वेदी शिलान्यास सानंद संपन्न

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट भोपाल के तत्त्वावधान में दिनांक 23 से 25 जनवरी 2015 तक श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक मंडल विधानपूर्वक पंच बालयति तीर्थंकर वेदी शिलान्यास संपन्न हुआ।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

दिनांक 25 जनवरी को भोपाल-विदिशा मार्ग पर स्थित नवीन संकुल ज्ञानोदयतीर्थ में वेदी शिलान्यास का कार्यक्रम संपन्न हुआ, जिसमें लगभग 1000 साधर्मीजन उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई, श्री जे.के. जैन (कलेक्टर-रायसेन), डॉ. आर.के. जैन विदिशा एवं समस्त ट्रस्टीगण भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

विधि-विधान के कार्य ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली द्वारा संपन्न हुये।

आध्यात्मिक गोष्ठी संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ जैन बालिका संस्कार संस्थान द्वारा दिनांक 18 फरवरी को **'युवा वर्ग धर्म से विमुख क्यों ?'** विषय पर एक आध्यात्मिक गोष्ठी आयोजित की गई।

गोष्ठी में डॉ. जिनेन्द्र जैन (विभागाध्यक्ष-प्राकृत व पाली), डॉ. कल्पना जैन (विभागाध्यक्ष-मनोविज्ञान), डॉ. ज्योतिबाबू जैन (सहआचार्य-सुखाड़िया विश्वविद्यालय), डॉ. महावीर जैन, डॉ. किरण जैन व डॉ. ममता जैन उपस्थित थे। सभी ने बालिकाओं की प्रशंसा करते हुए मार्गदर्शन किया।

चिदायतन में भूमिशुद्धि संपन्न

हस्तिनापुर (उ.प्र.) : भगवान शांतिनाथ अकंपन कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट द्वारा प्रस्तावित तीर्थधाम चिदायतन हेतु क्रय की गई भूमि की शुद्धि समारोहपूर्वक संपन्न हुई।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमंचदजी भारिल्ल एवं पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर के प्रवचनों का लाभ मिला।

समारोह की अध्यक्षता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की, जिसमें सर्वप्रथम श्री पवनजी जैन मंगलायतन ने चिदायतन की पृष्ठभूमि प्रस्तुत की। इस अवसर पर श्री अजितजी बड़ौदा ने संचालन करते हुए प्रस्तावित चिदायतन की रूपरेखा प्रस्तुत की।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा संपन्न हुये।

कार्यक्रम में मुम्बई, दिल्ली, बड़ौदा, जयपुर, उदयपुर, देहरादून, मुजफ्फरनगर, बड़ौत, मेरठ, आगरा, सहारनपुर, अलीगढ, खतौली, लंदन आदि स्थानों से अनेक साधर्मीजनों ने पधारकर लाभ लिया। ज्ञातव्य है कि चिदायतन में भव्य मंदिर, स्वाध्याय भवन, छात्रावास, भोजनालय, विद्यालय, अतिथि निवास, प्राकृतिक चिकित्सालय, शोध केन्द्र आदि का निर्माण प्रस्तावित है। कार्यक्रम का संयोजन पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन ने किया।

पंच परमेष्ठी विधान संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित जिनालय में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा जयपुर महानगर द्वारा की जाने वाली मासिक पूजन के अन्तर्गत दिनांक 8 फरवरी 2015 को पंच परमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा प्रवचनसार की गाथा 6 पर प्रवचन का लाभ लगभग 300-350 साधर्मियों को मिला। विधान के आयोजनकर्त्ता श्री अरुणकुमार नवीनकुमारजी पोद्दार फिरोजाबाद वाले जयपुर थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित सोनूजी शास्त्री ने संपन्न कराये।

प्रवेश प्रारंभ

नागपुर (महा.) : यहाँ स्थित श्री महावीर विद्या निकेतन के अन्तर्गत कक्षा 8वीं से 12वीं तक पाँच वर्षीय पाठ्यक्रम संचालित है, जिसका अष्टम् सत्र 20 जून 2015 से प्रारम्भ होने जा रहा है। इसमें प्रवेश हेतु 5 अप्रैल 2015 तक प्रवेश फार्म जमा कराकर 23 से 26 अप्रैल तक आयोजित चार दिवसीय प्रवेश पात्रता (साक्षात्कार) शिविर में पधारें। कक्षा 7वीं में 60% से अधिक अंक होना आवश्यक है।

प्रवेश फार्म **www.vidyaniketan.weebly.com** से अथवा नागपुर कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं। इस वर्ष मात्र 15 छात्रों को ही प्रवेश दिया जायेगा। **संपर्क सूत्र –** श्री महावीर विद्या निकेतन, नेहरू पुतला के सामने, इतवारी, नागपुर - 440022 (महा.) 9373005801, 9860140111, 7588740963, 8087216959 (मनीष जैन सिद्धांत-अधीक्षक)

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में साप्ताहिक गोष्ठियों की श्रृंखला में दिनांक 31 जनवरी 2015 को **'नयचक्र : एक अनुशीलन'** विषय पर शास्त्री वर्ग की एक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में विशाल जैन पिड़ावा (शास्त्री द्वितीयवर्ष) ने प्रथम एवं ऋषभ जैन मौ व निखिल शाह मुम्बई (शास्त्री द्वितीय वर्ष) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। मंगलाचरण पीयूष जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने किया।

गोष्ठी का संचालन सौरभ जैन कोलारस एवं बाहुबली जैन दमोह (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने किया। ग्रंथभेंट एवं आभार प्रदर्शन पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया।

दिनांक 1 फरवरी 2015 को **'समयसार : एक अनुशीलन'** विषय पर शास्त्री वर्ग की एक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में पण्डित सुनीलजी शास्त्री प्रतापगढ मंचासीन थे।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में चर्चित जैन खनियांधाना (शास्त्री प्रथम वर्ष) ने प्रथम एवं अंकित जैन धार (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे। मंगलाचरण शाश्वत जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने किया।

गोष्ठी का संचालन अनुभव जैन सिलवानी एवं प्रियम जैन बड़ामलहरा (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने किया। ग्रंथभेंट एवं आभार प्रदर्शन पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया।

आगामी कार्यक्रम...

सामूहिक बाल संस्कार शिविरों का आयोजन

श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, श्री कुन्दकुन्द स्वा. मंदिर ट्रस्ट भिण्ड एवं अ.भा.जैन युवा फै.भिण्ड के संयुक्त तत्त्वावधान में 11वें सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविरों का आयोजन दि. 7 से 16 मई तक किया जा रहा है। इस वर्ष मध्यप्रदेश के 7 जिलों भिण्ड, मुरैना, ग्वालियर, शिवपुरी, टीकमगढ, गुना, नरसिंहपुर में एवं उत्तरप्रदेश के 7 जिलों इटावा, औरया, मैनपुरी, फिरोजाबाद, एटा, झांसी, ललितपुर इसप्रकार 14 जिलों के 101 स्थानों पर शिविर लगाने का लक्ष्य है। अत: इसमें लगभग 175 विद्वानों की आवश्यकता है। अतएव जो महानुभाव बालबोध भाग 1,2,3 व वीतराग विज्ञान भाग 1,2,3 व छहढाला आदि पढा सकते हैं, हमें मोबाईल नम्बर 09826646644 (डॉ. सुरेश जैन) या 9826472529 (पुष्पेन्द्र जैन) व ई-मेल : kksmt.bhd@gmail.com पर सूचित करने की कृपा करें।

पंचकल्याणक वार्षिकोत्सव संपन्न

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ बड़ाफुहारा स्थित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जैन मंदिर का वार्षिकोत्सव दिनांक 13 से 18 जनवरी तक कर्मदहन मंडल विधानपूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में स्थानीय पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

विधान के आमंत्रणकर्ता श्री निर्मलकुमारजी जैन परिवार थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा हुये।

शोक समाचार

(1) मलकापुर (म.प्र.) निवासी इंजी. श्री विनोदजी निरखे के पिताजी **श्री प्रेमचंदजी निरखे** का दिनांक 4 फरवरी 2015 को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे। टोडरमल स्मारक द्वारा संचालित गतिविधियों में अनन्य सहयोगी थे।

(2) सागर (म.प्र.) निवासी **श्री लक्ष्मीचंदजी जैन** का दिनांक 12 फरवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आपने वर्षों तक टोडरमल स्मारक में रहकर स्वाध्याय का नियमित लाभ लिया।

(3) श्रीमती भंवरदेवी बज धर्मपत्नी श्री राजेन्द्रकुमारजी बज का देहावसान दिनांक 15 जनवरी 2015 को शांतपरिणामोंपूर्वक हो गया। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

(4) रत्नत्रयतीर्थ ध्रुवधाम बांसवाड़ा के प्रेरणास्रोत श्री धुलजी भाई ज्ञायक बांसवाड़ा का दिनांक 23 जनवरी को 102 वर्ष की आयु में शांतपरिणामों सहित देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा के पिताजी थे। टोडरमल स्मारक द्वारा संचालित तत्त्वप्रचार की गतिविधियों से गहराई से जुड़े हुए थे, उनका भरपूर लाभ लेते थे और सहयोग देते थे। आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट हेतु 5100/- रुपये प्राप्त हुये।

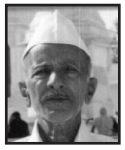

(5) बड़ामलहरा (म.प्र.) निवासी श्री प्रेमचंदजी जैन का 82 वर्ष की आयु में दिनांक 24 जनवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित दिनेशजी शास्त्री बड़ामलहरा के पिताजी थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

(पृष्ठ 25 का शेष ...)

शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं पण्डित सोनूजी शास्त्री का विशेष सहयोग रहा।

सम्मान समारोह – दिनांक 20 फरवरी को प्रात: उद्घाटन सभा के अन्तर्गत श्री गुलाबचंदजी कटारिया (गृहमंत्री-राजस्थान सरकार) का सम्मान किया गया। सायंकाल दिगम्बर जैन महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोककुमारजी बड़जात्या इन्दौर का सम्मान किया गया।

दिनांक 21 फरवरी को प्रात: विगत 47 वर्षों से टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के साहित्य विभाग में सेवायें देने हेतु श्री नेमीचंदजी गोधा जयपुर का उनकी निष्ठापूर्वक दीर्घकालीन सक्रिय सेवाओं हेतु 51 हजार रुपये का चैक प्रदान कर सम्मान किया गया। उल्लेखनीय है कि इस सम्मान समारोह में श्री महावीरजी पाटील सांगली की ओर से भी 20 हजार रुपये का योगदान रहा।

सायंकाल विगत 35 वर्षों से सतत टोडरमल महाविद्यालय में अध्ययन हेतु अनेक बालकों को प्रेरित करने के लिये श्री के.सी. जैन बण्डा को सम्मानित किया गया।

सभी कार्यक्रमों के संयोजक श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी एवं संचालक ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल थे।

अब... डॉ. भारिल्ल जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI
सुख, शान्ति, समृद्धि

जयपुर (राज.) : अखिल भारतीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के मर्मस्पर्शी प्रवचन अब जिनवाणी चैनल पर प्रात: 7.00 से 7.30 बजे तक नियमित दिखाये जायेंगे। यह क्रम एक वर्ष तक नियमित चलेगा। स्मरणीय है कि इसके पूर्व अहिंसा चैनल, साधना चैनल व जी-जागरण चैनल पर विगत 10 वर्षों से आपके नियमित प्रवचन प्रसारित किये जाते रहे हैं।

– अखिल बंसल,
महामंत्री-अ. भा. दि. जैन विद्वत्परिषद्

हार्दिक बधाई

(1) टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित नवीनजी पोद्दार जयपुर के लघु भ्राता **चि. नीलेश पोद्दार** पुत्र श्री अरुणकुमारजी पोद्दार का विवाह दिनांक 25 जनवरी को **सौ. गरिमा** के साथ संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये; अत: जैनपथप्रदर्शक एवं टोडरमल महाविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

(2) टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित निलयकुमारजी शास्त्री पुत्र श्री चक्रेशकुमारजी जैन सागर ने राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली द्वारा दिनांक 17 से 27 दिसम्बर 2014 तक आयोजित **यूथ कॉम्पटीशन** शृंगेरी में शतरंज प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। इसके पश्चात् दिनांक 6 से 9 जनवरी 2015 तक आयोजित **ऑल इण्डिया इंटर संस्कृत युनिवर्सिटी यूथ कॉम्पटीशन** अगरतला (त्रिपुरा) में पुन: शतरंज प्रतियोगिता में केरल, कर्नाटक, गुजरात व असम को हराकर स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

(3) अ.भा.दि. जैन विद्वत्परिषद् के सदस्य डॉ. बी.एल.सेठी (एम.ए., एम.फिल, डी.लिट्, जैनदर्शनाचार्य) को श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबरेवाल युनिवर्सिटी द्वारा एमरिटस प्रोफेसर नियुक्त किया गया है। आप किंगस्टन युनिवर्सिटी लंदन से भी विषय विशेषज्ञ के रूप में सम्बद्ध हैं।

इस उपलक्ष्य में वीतराग-विज्ञान एवं टोडरमल महाविद्यालय परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

आचार्य धरसेन दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय में –

प्रवेश हेतु अपूर्व अवसर

कोटा (राज.) : आचार्य धरसेन दि.जैन सि.महाविद्यालय के 8वें सत्र का शुभारंभ 25 जून से हो रहा है। महाविद्यालय में 10वीं कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश दिया जाता है। छात्रों को जैनधर्म के सिद्धांतों के अध्ययन के साथ माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की वरिष्ठ उपाध्याय (12वीं) एवं राज. संस्कृत विश्वविद्यालय की शास्त्री (बी.ए.समकक्ष) डिग्री पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है। छात्रों के लौकिक विकास हेतु अंग्रेजी, विज्ञान एवं कम्प्यूटर की शिक्षा भी प्रदान की जाती है। यहाँ छात्रों के आवास, भोजन एवं शिक्षा की संपूर्ण व्यवस्था नि:शुल्क रहती है। जो भी छात्र प्रवेश इच्छुक हों वे निम्न पते से पत्र या फोन द्वारा प्रवेश फार्म मंगा सकते हैं। प्रवेश-प्रक्रिया 24 मई से 10 जून 2015 तक मेरठ में लगने वाले प्रशिक्षण शिविर के दौरान संपन्न होगी। **संपर्क –** पण्डित धर्मेन्द्र शास्त्री (प्राचार्य), मो. 8104615220, बजाज पैलेस, नगर परिषद कॉलोनी, छावनी, कोटा (राज.); पण्डित रतन चौधरी (निदेशक), मो. 9828063891, 8104597337; **फार्म मंगाने का पता –** 565, महावीर नगर प्रथम, कोटा (राज.) 324005

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं
अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, मेरठ द्वारा आयोजित

49वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 24 मई 2015 से 10 जून 2015 तक

- आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के भवतापहारी सी.डी. प्रवचन का प्रसारण।
- डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर इत्यादि अनेक आत्मार्थी विद्वानों का भरपूर लाभ।
- ज्ञान-वैराग्य-अध्यात्म से भरे हुए आध्यात्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम।
- अत्यन्त भक्ति और उत्साह के साथ चौबीस तीर्थंकर विधान का मनोहारी आयोजन।
- श्रीजी एवं जिनवाणी की भव्य व विशाल शोभा यात्रा।
- निकटवर्ती तीर्थक्षेत्र हस्तिनापुर, मंगलायतन, मथुरा, चौरासी, बड़ागाँव इत्यादि की यात्रा का सहज लाभ।
- देशभर के अलग-अलग प्रान्तों से पधार रहे साधर्मीजनों का मेला।
- श्री टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु अपूर्व अवसर।

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

हार्दिक अनुरोध :- 1. आवास आरक्षण हेतु आवास फार्म भरकर 30 अप्रैल तक जयपुर या मेरठ कार्यालय को अनिवार्य रूप से भिजवायें ताकि आपके आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके। आवास फार्म मेरठ फैडरेशन की वेबसाइट www.jainyuvafedration.com पर जाकर डाउनलोड कर लें या निम्न संपर्क सूत्र से प्राप्त करें। 2. श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय हेतु छात्रों का चयन इसी प्रशिक्षण शिविर में होता है; अत: महाविद्यालय में प्रवेश हेतु अधिक से अधिक छात्रों को प्रेरणा देकर शिविर में भिजवायें।

संपर्क सूत्र -

श्री टोडरमल स्मारक भवन,
ए-4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.)
फोन-0141-2705581, 2707458;
Email - ptstjaipur@yahoo.com

सौरभ जैन (मंत्री), शिविर आयोजन समिति
नवकार टेक्सटाइल, 74, खंदक बाजार, मेरठ (उ.प्र.) फोन-09897241464;
आवास हेतु संपर्क -
अंबुज जैन, मोबा. 09837020293

आत्मार्थी छात्रों के लिए अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करें – इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें पूरे देश के विभिन्न भागों से आये छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 678 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 86 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं। अनेक छात्र पी.एच.डी./नेट/जे.आर.एफ. आदि भी कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को जगद्गुरुरामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय की जैनदर्शन (त्रिवर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो पूरे देश में बी.ए. के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस., कैट, मैट, जे.आर.एफ. जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को दो वर्ष का राजस्थान शिक्षा बोर्ड का उपाध्याय परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है, जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद यदि छात्र चाहें तो दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी कर सकते हैं, जो (एम.ए.) के समकक्ष है।

उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सेकेण्डरी (दसवीं) परीक्षा विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान व अंग्रेजी सहित प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित सोनूजी शास्त्री, पण्डित गोम्मटेश्वरजी चौगुले एवं पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

नया सत्र 1 जुलाई 2015 से प्रारंभ होगा। स्थान अत्यंत सीमित है; अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही अपना प्रार्थना-पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें।

यदि दसवीं का परीक्षाफल अभी उपलब्ध न हुआ हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं।

दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें **मेरठ में 24 मई से 10 जून, 2015 तक** होनेवाले ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा, जिसमें उन्हें प्रारंभ से अन्त तक रहना अनिवार्य होगा। **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल,** प्राचार्य, श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) फोन :(0141) 2705581, 2707458, फैक्स - 2704127 Email-ptstjaipur@yahoo.com

डॉ. भारिल्ल का विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष 2015 में भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। यह उनकी 33वीं विदेश यात्रा है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्न स्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर दें। उनकी सुविधा हेतु वहाँ के फोन, फैक्स एवं ई.मेल दिये जा रहे हैं, जहाँ डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे। डॉ. भारिल्ल, एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के कार्यक्रमों का आयोजन (JAANA) द्वारा किया जा रहा है। डॉ. भारिल्ल का नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है –

क्र.	शहर	सम्पर्क-सूत्र	दिनांक
1.	लन्दन	Dr. Dinkarbhai Shah 114, ASHURST ROAD, COCK FOSTER BARNET HERTS, EN4, 9LG (U.K.) Ph.-02084408994 Cell : 07712552973 Email : dinker_shah@yahoo.co.uk	12 से 19 जून
2.	शिकागो	Niranjan Shah (R) 847-330-1088 Bipin Bhayani (O) 815-939-3190 (R) 815-939-0056	20 से 27 जून
3.	अटलांटा	Atul Khara R : 972-8676535 O : 972-424-4902 C : 469-831-2163 Email - insty@verizon.net	28 जून से 5 जुलाई
4.	डलास	Atul Khara R : 972-8676535 O : 972-424-4902 C : 469-831-2163 Email - insty@verizon.net	6 से 12 जुलाई
5.	न्यूयार्क	Abhay/Ulka Kothari C : 516-314-6937 Emil-ukothari@verizon.net Dr. Hemant Bhai Shah Email-hemantshahmd@aol.com (M) 201-759-3202	13 से 15 जुलाई

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का विदेश कार्यक्रम

डॉ. भारिल्ल की तरह ही उनके शिष्य डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर को विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 'जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका' (JAANA) ने धर्मप्रचारार्थ अमेरिका में आमंत्रित किया है, यह उनकी छठी अमेरिका यात्रा है। उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है –

02 जून से 08 जून तक **शिकागो**, 09 जून से 15 जून तक **डलास-टेक्सास**, 16 जून से 22 जून तक **मियामी-फ्लोरिडा**, 23 जून से 27 जून तक **ऑर्लेन्डो**, 28 जून से 2 जुलाई तक **अटलान्टा (जाना शिविर)**, 2 जुलाई से 5 जुलाई तक **अटलान्टा (जैना कन्वेन्शन)**। आप उन्हीं स्थानों पर रुकेंगे, जहाँ डॉ. भारिल्ल रुकेंगे।

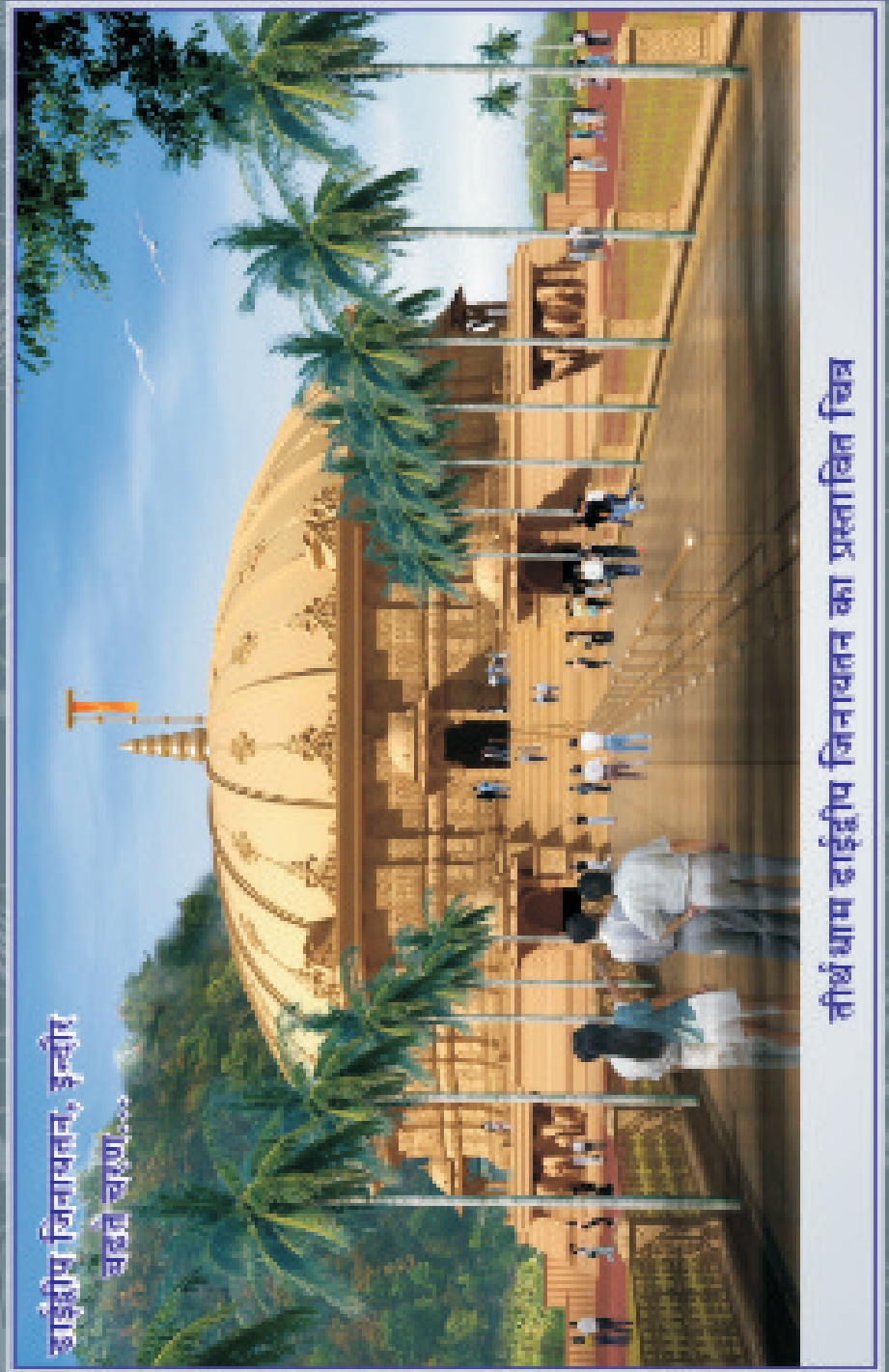

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2015-17*

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में विराजमान होने वाली अष्टधातु की प्रतिमा

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच.डी.
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए., नेट, एम.फिल (स्वर्णपदक), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम.ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

If undelivered please return to :- Pandit Todarmal Smarak Trust, A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015